बांग्लादेश की आज़ादी में भारत का योगदान (1971 युद्ध)

बांग्लादेश की आज़ादी का संघर्ष भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। 1971 में पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) ने पश्चिमी पाकिस्तान (अब पाकिस्तान) से अलग होने के लिए संघर्ष किया, और भारत ने इस स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत ने कूटनीतिक, मानवीय और सैन्य सहायता प्रदान की, जिससे अंततः 16 दिसंबर 1971 को बांग्लादेश का जन्म हुआ।

---

1. पृष्ठभूमि: बांग्लादेश मुक्ति संग्राम क्यों हुआ?

1947 में भारत के विभाजन के बाद पाकिस्तान दो भागों में बना –

1. पश्चिमी पाकिस्तान (वर्तमान पाकिस्तान)

2. पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश)

हालांकि दोनों हिस्सों में समान धर्म (इस्लाम) था, लेकिन सांस्कृतिक, भाषाई और आर्थिक रूप से दोनों हिस्से बहुत अलग थे। पश्चिमी पाकिस्तान का शासन वहाँ के पंजाबी और पठान नेताओं के हाथ में था, जबकि पूर्वी पाकिस्तान (जहाँ बंगाली लोग बहुसंख्यक थे) को हाशिए पर रखा गया।

मुख्य कारण:

भाषा विवाद: 1948 में पाकिस्तान सरकार ने उर्दू को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया, जबकि पूर्वी पाकिस्तान के लोग अपनी मातृभाषा बंगाली को मान्यता देने की मांग कर रहे थे।

राजनीतिक भेदभाव: पूर्वी पाकिस्तान की बड़ी जनसंख्या के बावजूद, सत्ता पश्चिमी पाकिस्तान के नेताओं के पास थी।

आर्थिक शोषण: पूर्वी पाकिस्तान से होने वाली आय का बड़ा हिस्सा पश्चिमी पाकिस्तान पर खर्च किया जाता था।

चुनावी संकट (1970): 1970 के आम चुनाव में शेख मुजीबुर रहमान की पार्टी अवामी लीग को भारी बहुमत (167 में से 160 सीटें) मिलीं, लेकिन पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहया खान और ज़ुल्फ़िकार अली भुट्टो ने सत्ता हस्तांतरण से इनकार कर दिया।

इसके विरोध में, 25 मार्च 1971 को पाकिस्तानी सेना ने "ऑपरेशन सर्चलाइट" शुरू किया, जिसमें हजारों बंगालियों का नरसंहार हुआ और लाखों लोग भारत में शरण लेने के लिए मजबूर हुए।

---

2. भारत की भूमिका:

(1) कूटनीतिक सहायता

भारत ने शरणार्थी संकट को अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका, ब्रिटेन, रूस और फ्रांस के नेताओं से संपर्क किया।

भारत ने 17 अप्रैल 1971 को बंगाली राष्ट्रवादियों द्वारा गठित मुजीबनगर सरकार (बांग्लादेश की अस्थायी सरकार) को समर्थन दिया।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कई देशों की यात्रा कर बांग्लादेश की स्वतंत्रता के पक्ष में समर्थन जुटाने का प्रयास किया।

सोवियत संघ (रूस) के साथ 'इंडो-सोवियत संधि' (अगस्त 1971) की, जिससे चीन और अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को समर्थन देने पर अंकुश लगा।

(2) मानवीय सहायता

1 करोड़ से अधिक शरणार्थियों को भारत में शरण दी गई।

पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा और मेघालय में कई शरणार्थी शिविर बनाए गए।

खाद्य, दवा और अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति की गई।

(3) सैन्य सहायता और युद्ध

भारत ने पहले मुक्ति बाहिनी (बांग्लादेश के स्वतंत्रता सेनानी) को गुप्त रूप से प्रशिक्षण और हथियार देने शुरू किए।
लेकिन जब पाकिस्तान ने 3 दिसंबर 1971 को भारत पर हमला कर दिया, तो भारत ने औपचारिक रूप से युद्ध में प्रवेश किया।

(i) युद्ध का घटनाक्रम

3 दिसंबर 1971: पाकिस्तान ने भारत के अमृतसर, आगरा और अन्य ठिकानों पर हवाई हमला किया।

4 दिसंबर: भारत ने आधिकारिक रूप से पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।

6 दिसंबर: भारत ने बांग्लादेश को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दी।

8-14 दिसंबर: भारतीय सेना ने 360 डिग्री रणनीति से पूर्वी पाकिस्तान पर तेज़ी से कब्ज़ा किया।

16 दिसंबर 1971: ढाका में पाकिस्तान के 93,000 सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया।

---

3. युद्ध का परिणाम और भारत के लिए लाभ

(1) बांग्लादेश की स्वतंत्रता

बांग्लादेश को एक नया और स्वतंत्र राष्ट्र बनने में मदद मिली।

शेख मुजीबुर रहमान को बांग्लादेश का पहला प्रधानमंत्री बनाया गया।

(2) पाकिस्तान का विभाजन

पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए, जिससे उसकी शक्ति कमजोर हुई।

भारत की रणनीतिक स्थिति दक्षिण एशिया में मजबूत हुई।

(3) भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि

इंदिरा गांधी को एक शक्तिशाली नेता के रूप में देखा जाने लगा।

भारत की सैन्य ताकत दुनिया के सामने आई।

---

4. निष्कर्ष

बांग्लादेश की स्वतंत्रता संग्राम में भारत ने न केवल सैन्य मदद दी, बल्कि कूटनीतिक और मानवीय सहायता भी प्रदान की। यह युद्ध भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था, जिसने दक्षिण एशिया की राजनीति को नया रूप दिया।